NEW EDUCATION POLICY : 2020

Nation Building Perspective

EDITED BOOK

Cheif Editor

Dr. Pradeep Kumar Tiwari

Editor

Dr. Rajesh Kumar Shukla

CONTENTS

Sr. No	Authors	Chapters	Pg. No
1.	Dr. Venkateswar Meher Dr. Pradeep Kumar Tiwari	A Swoc Analysis of National Education Policy-2020 in The Context of School Education	1-9
2.	Dr. Yatendra Pal Gaur	Technological Advancements and Innovations in Education	10-18
3.	Sonali Dr. Pradeep Kumar	Role of Environment Education in Achieving Sustainable National Development	19-32
4.	Arshid Ul Islam	Multidisciplinary and Holistic Educational Model Of Pandit Madan Mohan Malaviya: A Study With Special Reference to National Education Policy 2020	33-47
5.	Dr. Anuradha Yadav	Issues and Challenges Towards Indian Education System with Reference to Nep 2020	48-59
6.	Dr. Kanak Sharma	Use of Ict in Teaching and Learning Process: A Survey of Schools in Fatehpur Block of Sikar District, Rajasthan	60-71

7.	Srishti Jain	The National Education Policy Helps The Vocationalisation and Entrepreneurship Development in Student	72-83
8.	HUMA B	Nep 2020 – A More Holistic and Multidisciplinary Approach to Education	84-93
9.	Prof. (Dr.) Santosh Arora Shabia	Academic Leadership and Governance: Nep 2020	94-105
10.	Mamta Anand	Online Support Through Social Media to Distance Learners In The Time of Pandemic: The Case of Indira Gandhi National Open University	106-114
11.	Parvesh Kumari	In Indian Education System: Assessment in Odl	115-129
12.	Swati Mishra Chandan Shrivastava	School Cluster System and National Education Policy - 2020	130-142
13.	Pooja Gupta	The Role and Impact of Ict In Improving The Quality of Education in Reference to Nep 2020	143-153
14.	Arvind Kumar Dr. Rishu Kumari	Physical Health, Yoga and National Development	154-166
15.	Saurabh Tiwari Dr. Ram Kumar Pathak	Importance of Environmental Education in National Development	167-175

16.	Huma Khan Dr. Tata Ramakrishna	Counseling and Tutoring Services in Post Pandemic Era: A Comparative Study of Indira Gandhi National Open University and Uttarakhand Open University	176-192
17.	Rachna Saxena Dr. Pradeep Kumar Tiwari	A Conceptual Analysis of Open Educational Resources in Indian Education System: Challenges and Opportunities	193-201
18.	Manoj Singh Dr. Pradeep Kumar	Nep-2020: Vision and Path ways	202-208
19.	Dr. Yogeshver Prasad Sharma	National Education Policy-2020 in The Vision Of Rabind Ranath Tagore	209-217
20.	Mukesh Singh Dr. Pradeep Kumar	Nep 2020: An Approach of Future Education	218-223
21.	Priya Upadhyay	A Study on The Relationship Between Emotional Intelligence and Leadership Styles in Teachers	224-235
22.	Sanchita Dutta	Shifting Focus in School Curriculum: From Content Based Learning Tocompetency Based Learning	236-249
23.	Neha Sharma	Cybernetics	250-259
24.	Rahul Kumar Dr. Mohan Lal 'Arya'	Increasing Population and Climate Change	260-268

25.	Dr. Alok Kumar Singh	National Education Policy 2020: Nation-Building Perspective	269-287
26.	डॉ. प्रिया सिंह	व्यवसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास का रोजगार सृजन में भूमिका: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषण	288-294
27.	मनु रघुवंशी डॉ0 संजीव कुमार	आधुनिक शिक्षा के सन्दर्भ में सुझाव	295-301
28.	अजय गौतम अनामि का भारती	वर्तमान में मोबाइल शिक्षा	302-307
29.	शुभम पंवार डॉ बिन्दु सिंह	अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड. सस्थानों में कार्यरत शिक्षकों का शारीरिक स्वास्थ्य, योग एवं राष्ट्रीय विकास	308-317
30.	सविता सिंह डॉ. मोहनलाल 'आर्य'	गोरखपुर जनपद में सिंचाई साधन एवं सिंचित क्षेत्र एक भौगोलिक विश्लेषण	318-326
31.	डॉ० कीर्ति सिंह सुषमा	युवाओं में बढ़ता मानसिक तनाव, चिन्ता व अवसाद	327-331
32.	खालिदवकार आबिद	शिक्षण अधिगम में डिजिटल मीडिया का प्रयोग और विद्यार्थियों के सामने चुनौतियां– एक समीक्षात्मक अध्ययन	332-338
33.	अनुराग कुमार मिश्र	फेक न्यूज का बच्चों के बुनियादी ज्ञान पर असर	339-344
34.	ध्रुव कुमार डॉ. वर्षा तिवारी	एनईपी 2020 में व्यावसायिक शिक्षा और उद्यमिता	345-350
35.	डॉ. मोहनी दुबे	भारत की नई शिक्षा नीति एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	351-356

36.	प्रशान्त गिरी प्रो० अंजलि बाजपेयी	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा भाषा	357-365
37.	सैम डी चन्द	विश्व की प्राचीनतम शिक्षा प्रणालियों में भारतीय (वैदिक) शिक्षा प्रणाली का स्थान	366-372
38.	डॉ0 प्रदीप कुमार	भारत में वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था और उसकी विशेषताएँ	373-377
39.	डॉ. भुवनेश्वर सिंह एवं डॉ. हरवीर यादव	शिक्षा का अधिकार, 2009	378-382
40.	डॉ. कविता शर्मा	युवाओं की चिंतनशक्ति को क्षीण करती चिंता	383-391
41.	डॉ. अलका शर्मा	राष्ट्रीय शिक्षा नीति का युवा सशक्तिकरण पर प्रभाव	392-395
42.	डॉ. मोहित मिश्रा	भारत बोध और नई शिक्षा नीति	396-400
43.	नितिन कुमार डॉ० राजकुमारी सिंह	पर्यावरण शिक्षा और राष्ट्रीय विकास	401-407

भारत बोध और नई शिक्षा नीति

डॉ. मोहित मिश्रा

हिंदी विभाग
आई.एफ.टी.एम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
Email Id: mmishra18@gmail.com
संपर्क सूत्र–7982349547

साराँश

भारतीय शिक्षा पद्धति को प्रारम्भिक दौर से देखने से ज्ञात होता है कि भारत में शिक्षक बनने और शिक्षा ग्रहण करने की इच्छा स्वतः ही जाग्रत होती रही है। जैसा कि हम सभी जानते ही है भारत में शिक्षा का प्रारंभिक दौर गुरुकुल परंपरा का महत्व था, विद्यार्थी के पास स्वतंत्रता थी कि वह क्या सीखना चाहता है। शिक्षा प्राप्त करने जाने वाले विद्यार्थी को अपनी रुचि का वर्णन करना होता था उसके आधार पर उसका चयन गुरुकुल में किया जाता था। आज जिस नई शिक्षा नीति को लागू किया गया है वह भी विद्यार्थी को स्वतंत्रता प्रदान करती है कि विद्यार्थी अपने विषय का चयन अपनी रुचि के आधार पर कर सकता है। नई शिक्षा नीति ने बंधनों को तोड़ दिया है जो संगीत के साथ साथ विषय विज्ञान का विषय पढ़ने का मौका प्रदान करती है। शिक्षा के क्षेत्र में जो दीवार बनी हुई थी उसको तोड़ने का कार्य इस नई नीति ने किया है। समकालीन परिस्थित में रोजगार को ध्यान में रखते हुए शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी आते है जिनको इस शिक्षा नीति ने स्वतंत्रता प्रदान की है, जिससे वह अपने जीवन यापन का निर्वाहन कर सके। वर्तमान परिस्थितियों में जिस प्रकार की प्रतियोगिता हो रही है उसके लिए शिक्षा को नई शैली में बदलने का कार्य इस नई नीति ने किया है। आज शिक्षा को तकनीक से जोड़ा गया है जो समय की माँग रही है आज शिक्षा को आधुनिक बनाना समय की माँग रही है जिसको इस नई शिक्षा नीति के द्वारा पूर्ण किया जा रहा है। गांधी जी की स्वतंत्र ग्राम इकाई को भी इसका आधार माना जा सकता है जिसमें आत्मनिर्भर और कौशल प्रधान शिक्षा नीति का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। आज उस परिदृश्य को धरातल पर उतरा गया है। वर्तमान समय में शिक्षा का विस्तार करना समय की माँग रही है।

नई शिक्षा नीति हमारे विद्यार्थियों को बृहत परिदृश्य प्रदान करती है। भारतीय शिक्षा के विकास को निरंतर गतिशीलता प्रदान करने के लिए नवीन शोध कार्यों को बढ़ावा दिया जाता रहा है। भारत को प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ स्थान मिला है। शिक्षा के लिए भारत के निम्न प्रदेशों का नाम प्रमुख है नालंदा, तक्षाशिला आदि को विश्व स्तर पर महत्व मिला है। देश ही नहीं बल्कि भिन्न–भिन्न विदेशों के विद्यार्थी भी इन केंद्रों से शिक्षा ग्रहण करने आते रहे है। शिक्षा के द्वारा किसी भी राष्ट्र

के निर्माण का प्रारंभ होता है, जिसके बिना युवा वर्ग को मार्ग दिखाना संभव नहीं हो सकता। शिक्षा न मिलने की स्थिति में किसी भी राष्ट्र के विनाश का प्रारंभ हो जाता है। नई शिक्षा नीति 2020 को सहभागी बनाया गया है, जिसमें 2 लाख से अधिक विद्वानों के सुझाव लिए गए है। यह शिक्षा नीति वर्तमान के साथ–साथ भविष्य की पीढ़ी का भी ध्यान रखती है, जिसके अंतर्गत आने वाली पीढ़ी की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं व चुनौतियों का भी विशेष ध्यान दिया गया है। यह शिक्षा नीति वर्तमान शिक्षा के अनुपात को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, जिसके द्वारा विद्यार्थी को उच्च शिक्षा में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा एवं डिग्री पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया गया है। यह नीति शोधपरक, नवाचार और अनुसंधान को आगे बढ़ाने में सहायक प्रतीत हो रही है। इस नीति के माध्यम से देश के युवा को समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक वैश्विक परिवेश को समझने में सहायता प्राप्त होगी। नई शिक्षा नीति के द्वारा शिक्षा प्रणाली में भारतीय परंपराओं और मूल्यों को महत्व दिया गया है। इस शिक्षा नीति ने इंडिया के स्थान पर भारत का स्वरूप देखने का मौका मिलता दिखाई दे रहा है। उच्च शिक्षा के द्वारा युवाओं को अधिक तार्किक एवं लक्ष्य केंद्रित बनाने की जरूरत दिखाई देती है। आज तकनीकी शिक्षा में विज्ञान और इंटरनेट संबंधी विषय अंग्रेजी भाषा में प्रसारित किया जाता रहा है जिसको स्वदेशी भाषा में आसानी से प्रसारित किया जाए इसकी व्यवस्था हो रही है।

गंगवाल सुभाष 2020 ने लिखा है कि 21वीं सदी ज्ञान प्रधान सदी है जिसमें विज्ञान एवं तकनीकी विकास परिवर्तन के प्रमुख आधार है। किसी भी देश, समाज और परिवार, समृद्ध एवं प्रतिस्पर्द्धी बनाने के लिए शिक्षा को महत्व देना होगा। भारत में शिक्षा केंद्र एवं राज्यों का विषय है। केंद्र सरकार राष्ट्रीय हित में शिक्षा का मसौदा तैयार करती है, जिनका अनुमोदन संसद द्वारा लिया जाता है लेकिन राज्यों की विधान सभाओं को भी विचार विमर्श, बहस के माध्यम से अनुमति प्रदान करनी होती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सहभागी बनाया गया है। यह नीति विद्यार्थियों को कार्य कौशल सीखने को महत्व देती है, वर्तमान समय में रोजगार की बढ़ती माँग को नियंत्रित करने एवं आत्मनिर्भर बनाए के लिए शिक्षा में कौशल युक्त शिक्षा को बढ़ावा देना प्रारंभ किया है।

इस संदर्भ में प्रो. शर्मा के. एल. 2020 ने अपने लेखपत्र में लिखा है कि शिक्षा से सशक्त और सविमर्शी समाज बनया जा सकता है लेकिन शिक्षा इतनी गुणवत्तापरक हो कि मानुष्य खुद को स्वतंत्र, रचनात्मक और नैतिक दृष्टि समझ सके। शिक्षा परिवर्तन और सशक्तिकरण का साधन है। शिक्षा को महत्व देते हुए व्यक्ति को नवीन दृष्टि प्रदान करना एवं उसकी क्रिया शीलता का विकास करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए, जिसके द्वारा व्यक्ति एक सभ्य समाज का निर्माण करने में सफल हो सकता है। शिक्षा विद्यार्थी को यदि सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक विवेचना की दृष्टि प्रदान नहीं करती तो वह नीति अनुचित हो जाती है। भारत की प्राचीन शिक्षा के मूल को देखने पर ज्ञात होता है की शिक्षा के द्वारा अनेक प्रकार के परिवर्तन प्रस्तुत हुए है।

सिंह दुर्गेश 2020 ने अपने लेख पत्र में लिखा है कि भारत कि वर्तमान शिक्षा वयवस्था त्रिस्तरीय है जिसमें प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा शामिल है। यह शिक्षा व्यवस्था शिक्षित लेकिन रोजगार विहीन युवाओं को तैयार करती है। जिससे स्पष्ट होता है कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था विश्व स्तर के कुशल एवं दक्ष युवा तैयार करने में सक्षम नहीं है। सरकार को इसके लिए शिक्षा में निवेश करना होगा। देश के युवाओं को रोजगार प्रदान करना तथा उनको अपने खुद के कारखाने प्रारंभ करने पर ज़ोर दिया जा रहा है। वर्तमान में शिक्षा का दबाव युवा को स्वावलंबी बनाने का है, जिससे राष्ट्र और राज्य दोनों को लाभ प्राप्त होता है।

नई शिक्षा नीति के द्वारा पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त परिणाम के महत्व को समझते हुए विद्यार्थियों के अंदर होने वाले परिवर्तन का विस्तृत वर्णन किया गया है। यूजीसी के द्वारा पाठ्यक्रम में जो परिवर्तन किए गए उनका महत्व निकट भविष्य में दिखाई देगा। मनुष्य के सीखने की प्रक्रिया को यदि ब्लूम टैक्सोनोमी के तीन भागों के आधार पर देखा जाए तो, 1. **Cognitive Domain** 2. **Affective Domain** 3. **Psychomotor Domain** का सरल और सहज भाषा में शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया का स्वरूप दिखाई देता है। एक बालक जो अपनी माता के माध्यम से प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करता है उसके लिए एक शब्द का महत्व उसके कार्य के आधार पर निर्धारित हो जाता है, उदाहरण के आधार पर एक बच्चे को माता द्वारा बताए गए पंखे के नाम को उसके कार्य के आधार पर पहचाने और उससे परिचित करने का कार्य किया तो उसके लिए सभी घूमने वाली वस्तुओं का नाम पंखा ही हो जाता है। क्योंकि बच्चे के लिए उसका कार्य ही महत्व रखता है, इस प्रकार से **Psychomotor Domain**में जो कार्य हमें सीखा है उसका संबंध मानसिक एवं शारीरिक क्रिया के साथ जुड़ा होता है जिसमें निरंतर प्रयोग होने पर वह परिपूर्णता तक पहुँचता चला जाता है। इस उदाहरण में बचपन में सीखी गई साइकिल से कार या मोटर साइकिल तक की यात्रा का वर्णन किया जा सकता है, जिसमें प्रारम्भिक कष्ट के बाद व्यक्ति उसमें परिपूर्ण होता चला जाता है। निरंतर प्रयोग होने के कारण रास्ते के अवरोध भी महत्वपूर्ण नहीं रह जाते सामान्य रूप से उनका निवारण होता रहता है।

परिणाम आधारित पाठ्यक्रम का महत्व तभी है जब एक विद्यार्थी आवश्यकता अनुसार पाठ्यक्रम में पढ़ाई गई बातों का प्रयोग अपने जीवन में भी यथा संभव अवसर पर उचित रूप से कर सके। परिणाम आधारित पाठ्यक्रम के द्वारा ही दो तरफा मार्ग खोला जा सकता है जिससे हमारे पाठ्य के महत्व को समझा जा सकता है। नई शिक्षा नीति की विशेषताओं में यह एक मुख्य बिन्दु है जिससे विद्यार्थी को सीखना एवं उसको जीवन में प्रयोग करना विशेषता है। नई शिक्षा नीति ने विद्यार्थी को स्वतंत्रता प्रदान की है। वर्तमान समय में विद्यार्थी अपनी रुचि को अधिक महत्व देता है जिसकी स्वतंत्रता नई शिक्षा नीति के द्वारा विषय के चयन के रूप में प्रदान किया जा रहा है।

अध्ययन के परिणाम का आधार बताए तो वह तीन भागों में वर्णन किया जा सकता है, जो निम्न प्रकार है, 1. Instructional Intent 2. Direction of Instruction 3. Guideline for Evaluation जिनका महत्व समझने पर ज्ञात होता है कि हम क्या सीखा रहे है। कैसे सीखा रहे है। हम विद्यार्थी का मूल्यांकन कैसे कर रहे है या उसकी क्या प्रविधि प्रयोग करेंगे। उन्होंने ए–बी–सी–डी सूत्र में बाँधते हुए समझा जा सकता है कि ए– अध्येयता जो सिख रहा है वह कौन है। बी– अपने अध्येयता के आधार पर शिक्षण कला का प्रयोग करना जिससे हमारी बात का संप्रेषित होने में अवरोध उत्पन्न न हो, शिक्षा का महत्व अध्यापक और अध्येयता दोनों पर निर्भर करता है। परिणाम आधारित पाठ्यक्रम में अध्येयता के असमान्य परिस्थितियों में अपने ज्ञान का प्रयोग करने में सक्षम होना आवश्यक होता है।

विद्यार्थियों को सामान्य जानकारी के माध्यम से पाठ्यक्रम की जानकारी देना सरल तरीका माना जाता है, जिससे विद्यार्थी सामान्य रूप से अपनी समझ को विकसित करने का प्रयास करता है, हम इसका प्रयोग सामान्य प्रकार के प्रश्न का निर्माण करते हुए उनसे उनकी समझ का परिचय प्राप्त कर सकते है। विद्यार्थी को पाठ्यक्रम के द्वारा किसी भी घटना या परिस्थिति का मूल्यांकन करने का उत्साह उत्पन्न करना अवस्यक होता है। जिससे वह अपने अध्ययन का प्रयोग जीवन में करने योग्य निर्मित हो सके।

प्रश्न पत्र निर्माण उचित प्रकार समझाया गया जिससे संपूर्ण पाठ्यक्रम को आधार बनते हुए विद्यार्थी के ज्ञान का परीक्षण किया जा सकता है। प्रश्न पत्र के द्वारा एक विषय को दूसरे विषय के साथ जोड़ कर प्रश्न करना अधिक लाभ दायक होता है जिससे विद्यार्थी की प्रतिभा और उसके स्तर का निर्धारण किया जा सकता है विद्यार्थी को समझ निर्माण का आधार भी बनया जा सकता है। विद्यार्थी अपने ज्ञान को भिन्न–भिन्न भागों में बाँट कर समझ सकता है जो सरल माध्यम होता है। क्या, क्यूँ, कैसे, कब, कहाँ जैसे प्रश्न को महत्व मिलता है, यह एक प्रकार का प्रावधान है, जिससे एक समस्या का पता लगाया गया, उसके निदान के उपाय खोजने के लिए प्रविधि का निर्धारण किया गया जिससे उस समस्या का निराकरण हेतु उपाय किया जा सके। उसके तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रविधि का प्रयोग करना जिससे उत्तम निष्कर्ष निकाला जा सके, इस शिक्षा नीति में विद्यार्थियों के लिए बनाए जाने वाले प्रश्न पत्र का महत्व समझते हुए उसके निर्माण का क्रम समझाया गया है, जिससे एक पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी की समझ को परिपक्वता प्रदान की जा सके।

पाठ्यक्रम के द्वारा जो लक्ष्य प्राप्त करने का उदेश्य रखा गया था उसको प्राप्त करने के लिए एक प्रश्न पत्र और विद्यार्थी की प्रतिभा का ज्ञान आवश्यक होता है। विद्यार्थियों के उत्तर से पता चलता है की विद्यार्थी का स्तर कैसा है, जिससे उनके स्तर को बेहतर बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों को उनके विचार के आधार पर महत्व देने से उनके अंदर ऊर्जा का निर्माण होता है, जिससे वह बेहतर बनने की ओर अग्रसित

होते हैं। विद्यार्थियों के अंदर जिज्ञासा का निर्माण करना आवश्यक है वर्तमान समय में जो जानकारी विद्यार्थियों के पास उपलब्ध हए उससे आगे की जानकारी देने का कार्य करने से विद्यार्थी कक्षा में उपस्थित होगे। इसके लिए वक्ता ने ओपन बुक परीक्षा के बाद होने वाले बदलाव हो समझा जा सकता है जो विद्यार्थी के अंदर एक जिज्ञासा का भाव निर्मित करता है। विद्यार्थियों को जो परियोजना कार्य दिया जाए वह दैनिक जीवन से जोड़ते हुए पाठ्यक्रम को पूर्ण करने वाला होना चाहिए जिससे विद्यार्थी उसके प्रति अपनी रुचि दिखाएगा। विद्यार्थी को सामूहिक कार्य योजना देने का अधिक महत्व रहता है, प्रश्न उत्तर और उनकी सहभागिता को महत्व देना आवश्यक होता है। कार्य योजना में शोध आधार होना आवश्यक होता है। सामूहिक कार्य के मूल्यांकन का विवरण प्रस्तुत किया गया।

इस शिक्षा नीति 2020 में एक पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करने की वैज्ञानिक विधि का चित्रण किया गया, जिससे बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते है। पाठ्यक्रम का निर्माण करने का तरीका बताया गया जिससे विद्यार्थी की संपूर्ण प्रतिभा का विकास किया जा सकता है। यह शिक्षा नीति प्राचीन भारत के मूल आधार को बढ़ावा देने का कार्य करती है जिससे एक राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

- प्रो. के. एल. शर्मा, दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण, पृष्ठ संख्या, 2 24 अगस्त 2020
- सिंह दुर्गेश, क्रानिकल मासिक पत्रिका, मई 2020 पृष्ठ संख्या 80–81
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
- प्रकाश कुमार, 21वीं सदी की माँग पूरी करेगी शिक्षा नीति, आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020
- गंगवार सुभाष, नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुक़ाबला, दैनिक नवज्योति, पृष्ठ संख्या–4, 22 अगस्त 2020
- दृष्टि, the vision (चर्चित मुद्दे) नई शिक्षा नीति, 2020

***